IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 12, Issue 1, December 2021

Impact Factor: 4.819

>Bk Ip ¼1958½ esa Ikekftd Lo:i

M,- mn;Hkku ;kno

vfILVsV iz[k]sQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

दो भागों में प्रकाशित 'यशपाल' का यह उपन्यास देश के सामाजिक और राजनैतिक वातावरण को यथासम्भव ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित करने का प्रयास करता है। उपन्यास के प्रथम खण्ड का नाम 'वतन और देश है' तथा द्वितीय खण्ड का नाम 'देश का भविष्य' है। उपन्यास का पहला भाग देश के यथार्थ विघटन को रूपायित करता है तो दूसरा भाग संघटन को 'देश के बँटवारे के समय और उसके पहले तथा बाद में साम्प्रदायिक विभीषिका में जलते लोगों का मार्मिक चित्रण किया गया है।

विभाजन के बाद देश के लाखों निरपराध आदमियों को तलवार के घाट उतार दिया गया। लाखों लोग गृहविहीन, कुटुम्बहीन हो गए। अनेक प्रकार की पाशविक यंत्रणाओं से जूझते हुए लोगों ने अपने लिए तथा स्वतंत्र देश के लिए अनगिनत समस्याएँ पैदा की। मानवीय यातना के इतिहास में यह विश्व की क्रूरतम, घटनाओं में से एक मानी जाएगी। 'चमन लाल' के शब्दों में ''बीसवीं शताब्दी के चौथे–पाँचवे दशक के हिन्दुस्तानी जीवन की लय उसकी मार्मिक और प्रामाणिक छवि प्रस्तुत करता है।''[1]

उपन्यास की कथा का आरम्भ भोला– पांधे की गली से होता है। आजादी की विभीषिका ही तत्कालीन, सामाजिक, राजनीतिक जीवन का आईना बनती है। पहला खण्ड 'वतन और देश' है। जिसमें लाहौर में लम्बे समय से रह रही हिन्दू–मुसलमानों की पीढ़ियाँ, एक दूसरे के दुःख दर्द में काम आती हैं, एक–दूसरे से घुलती मिलती, एक ऐसे स्वतः पूर्ण समग्र समाज का निर्माण किए हुए थीं– जिससे अलग होने की कल्पना स्वप्न में भी नहीं की जा सकती थी। दूसरे खण्ड 'देश का भविष्य' आजादी के बाद देश की स्थिति का जिक्र है। वतन छूटने के बाद सहअस्तित्व एवं भाईचारे का सूत्र भी टूट गया। लाहौर की भोल पांधे की गली जहाँ हिन्दू–मुसलमानों के घर आपस में सटे हुए थे और जिनके सामाजिक सम्बन्ध मधुर थे। उसी गली में दो औरतें हिन्दू रक्षा कमेटी से आती हैं और कलकत्ते में हो रहे दंगो का वर्णन करने लगती हैं। तथा मुसलमानों के प्रति अफवाहों को सुना जाती है। ''मुसलमान मरे खूब तैयारी कर रहे हैं। पानी के नल कटवा–कटवा कर बन्दूकें बना रहे हैं। मुसलमानों ने भी छूरे रख लिए हैं। हमी लोग सोए हुए है।''[2]

हिन्दू– मुसलमान साथ–साथ रहते जरूर हैं लेकिन उनमें बुनियादी विषमताएँ और ये बुनियादी बातें कहीं गहरे अंतर्मन में जाकर बैठ गई है। 'झूठा सच' की मौलिकता इस बात में अन्तर्निहित है, कि इसका कथा वृत्तान्त विभाजन के उस महाआख्यान को ही ध्वस्त करता है, जो उसे महज अंग्रेजों की चाल और मुस्लिम–लीग की मजहबी माँग तक सीमित करता है। यशपाल हिन्दू–मुस्लिम भाईचारे की ऊपरी सतह को खुरच कर उन कुरूप सच्चाइयों को उजागर करते हैं, जिनके बिना विभाजन के आख्यान को नहीं समझा जा सकता। लाहौर को भोला पांधे की गली के हलचलों से झूठा–सच के पृष्ठ खुलते हैं, वहाँ हिन्दू

1. हरिमोहन शर्मा– विभाजन की त्रासदी की महागाथा, वर्तमान साहित्य पृ0– 340

2. यशपाल– झूठा सच– पृ0– 52

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 12, Issue 1, December 2021 Impact Factor: 4.819

रक्षा समिति को महिलाओं के मुस्लिम विरोधी प्रचार का सफल होना नहीं है। इसके मूल में है हिन्दू मुसलमानों के बीच आशंका, घृणा और ऊँच–नीच की वह दीवार जो हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता और मुस्लिम उत्पीड़न की ग्रन्थि पर टिकी है।

लेखक ने देश के बँटवारे के समय और उसके पूर्व पश्चात की सम्प्रदायिक विभीषिका में जलते हुए भारत और पाकिस्तान की जन–यातना का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। ''देखने में लगता है कि दोनों देशों की जनता स्वभावतः अपने साम्प्रदायिक विद्वेष की आग में धधक उठी थीं। किन्तु यह होकर भी झूठ था। सच थी जनता को बरगलाकर अपने को तृत्प करने वाली राजनीतिक नेताओं की अदम्य अमानवीय प्रयास। 'जयदेव पुरी' सच ही कहता है–''लीग के लीडर और जिन्ना मजहबी, मुलसमान नहीं, पोलिटिकल मुसलमान हैं, उन्हें हूकूमत करने का मौका चाहिए। और जब एक बार इन नेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए जनता को बरगला दिया तो परिस्थितियाँ स्वयं उनकी संभाल के बाहर हो गयीं। किन्तु इससे क्या? जनता तो पाँव रखने की सीढ़ी है। फिर जो कुछ हुआ वह बड़ा ही अमानवीय था। प्रगतिशील तत्वों के प्रयास के बावजूद तनाव बढ़ता ही गया। लूट–पाट हत्या स्त्रियों की अमानवीय दुर्दशा, सामूहिक पलायन, साम्प्रदायिक विद्वेष और आतंक बढ़ता ही गया। इस भयानक ज्वाला में प्रेम, करूणा, विश्वास, मूल्य सभी जलकर कुत्सित हो गये।''[3]

उपन्यास में हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों के सौहार्दपूर्ण न हो सकने के लिए हिन्दुओं की सवर्ण मानसिकता एवं आर्थिक सम्पन्नता को जिम्मेदार तो मानते ही हैं। ''लाहौर में मुसलमान इक्यावन फीसदी हैं तो क्या हुआ जमीन–जायदाद तो अस्सी फीसदी से ज्यादा हिन्दुओं की है।''[4] उपन्यासकार यह भी मानते हैं कि रोटी एवं बेटी के स्तर पर इन सम्बन्धों की व्याप्ति न हो सकने के लिए समुदाय के प्रगतिशील लोगों की रूढ़िवादी मानसिकता आड़े आ जाती है। पुरी अपने प्रेम की सफलता के लिए अपनी बहन तारा का सहयोग तो लेता है लेकिन तारा के असद के प्रति आकर्षण जानकार तिलमिला उठता है। उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी दाँव पर लगती दिखाई देती है।

इस उपन्यास में हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों में घृणात्मक आचरण के लिए अंधविश्वास, मूढ़ता और धर्म के आधार पर निर्मित होने वाले संस्कारों से उत्पन्न अमानवीयता, असंवेदनाशीलता, चारित्रिक अवसर वादिता को जिम्मेदार ठहराया है। 'यशपाल' विभिन्न पात्रों के माध्यम से इसे प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास का एक प्रमुख पात्र प्रो0 प्राणनाथ साम्प्रदायिक घृणा एवं विद्वेष का मूलगामी विश्लेषण करता है और इस व्यवहार के मूल कारण में हिन्दू– समाज की असहिष्णुता और मुसलमानों के प्रति घृणा को देखता है। डॉ0 हरदयाल मानते है कि मुसलमान अगर न होते तो यह समस्या अस्पृश्यता के स्तर पर देखने को मिलती है। ''मुसलमान न सही अछूत ही समस्या बन जाएँगे।''[5]

वहीं पर असद जैसे पात्र जहाँ प्रगतिशील विचारधारा से ओत प्रोत हैं और साम्प्रदायकिता के मुद्दे पर बेबाक टिप्पणी करते है। जुबेर, जुबैदा, आदि पात्र हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रयासरत हैं। असद की सुलझी दृष्टि द्रष्टव्य है। ''अगर धर्म या सम्प्रदाय के विश्वासों की पृथकता के बावजूद हिन्दू– मुसलमानों के सामाजिक सम्बन्ध होते रहें तो आपसी झगड़ा कितना कम हो जाए। हिन्दू या मुसलमान साम्प्रदायिक विश्वास को ग्रहण करने का कुछ अर्थ भी तभी होगा।''[6] भले ही साम्प्रदायिक अंधकार की डूबी रात्रि में एक दीपक की तरह ही हो। उपन्यास के पात्र जयदेव पुरी की भूमिका सराहनीय है। वहीं पर तारा का यह प्रगतिशील कथन भी महत्वपूर्ण है। ''आजकल हिन्दू–मुलसमानों के व्याह हो रहे हैं। महात्मा गाँधी के लड़के ने ब्रह्मण की लड़की

---

3. रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, पृ0–140
4. यशपाल– झूठा सच पृ0 – 191
5. यशपाल– झूठा सच– पृ0– 210
6. वही– वही– पृ0– 67

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 12, Issue 1, December 2021 Impact Factor: 4.819

से और पंडित जवाहर लाल की लड़की ने पारसी लड़के से शादी की है। हिन्दू–पारसी–मुसलमान में फरक क्या है, आदमी आदमी सब एक।''[7]

उस समय हिन्दू– मुसलमान में जो दूरियाँ थी उनको भी यशपाल इंगित करते हैं। वीरेन्द्र यादव का यह कथन– ''झूठा–सच की मौलिकता इस तथ्य में अन्तर्निहित है कि इसका कथा वृत्तांत विभाजन के उस महाआख्यान को ही ध्वस्त करता है, जो उसे महज अंग्रेजों की चाल और मुस्लिम भाईचारे की ऊपरी सतह को खुरच कर उन कुरूप सच्चाईयों को उजागर करते हैं, जिनके बिना विभाजन के आख्यान को नहीं समझा जा सकता। लाहौर की भोला पांधे को जिस गली की हलचलों से झूठा–सच के पृष्ठ खुलते हैं, वहाँ हिन्दू रक्षा समिति की महिलाओं के मुस्लिम विरोधी प्रचार का सफल होना गली की भोली महिलाओं को

समझ का परिणाम मात्र नहीं है। इसके बीच आशंका, घृणा और ऊँच–नीच की वह दीवार जो हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता और मुस्लिम उत्पीड़न की ग्रन्थि पर टिकी है।''[8]

कथा संयोजन में यशपाल ने हिन्दू और मुसलमान पात्रों का सहयोग लेकर विभाजन की महागाथा को और प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया है। असद जैसे पात्र प्रगतिशील विचारधारा से ओत प्रोत हैं। साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर स्पष्ट बोलते हैं। जुबेर, जुबैदा आदि पात्र हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रसिद्व हैं। असद की मानवीय दृष्टि उल्लेखनीय है ''अगर धर्म या सम्प्रदाय के विश्वासों की पृथकता के बावजूद हिन्दू– मुसलमानों के सामाजिक सम्बन्ध होते रहे तो आपसी झगड़ा कितना कम हो जाए। वास्तव में हिन्दू या मुसलमान साम्प्रदायिक विश्वास को ग्रहण करने का अर्थ भी तभी होगा।''[9]

यशपाल के पात्र चयन की दृष्टि से नाशिरा शर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है ''हिन्दू–पंजाबी समाज से किरदार उठाते हुए यशपाल जी ने विविधता का विशेष ध्यान रखा है। मगर मुसलमान पात्रों के चयन में यशपाल जी से कहाँ चूक हो गयी कि उन्हें एक भी ऐसा पात्र नजर नहीं आया जो गाँधी के कथानुसार देशभक्त होता या रफी अहमद किदवई या अबुल कलाम आजाद का अक्स होता या फिर पुरी की तरह ही कोई छद्म इंकिलाबी होता या फिर कोई वैचारिक संगठन होता जिसमें हम बन्ने भाई, अली सरदार जाफरी, कैफी आजमी को झलकता– उबलता देख पाते, खासकर जब उपन्यास का काफी हिस्सा लखनऊ को समेटता है। मंटो की तरह वह (तोबा टेक सिंह) एक भी किरदार ऐसा न दे सके जो मुसलमान हो और बँटवारा नही चाहता।''[10]

इस प्रकार यदि देखा जाय तो हिन्दू– मुस्लिम सम्बन्धों की जहाँ तक बात है। 'झूठा सच' में सौहार्द कम आया है लेकिन वह आया जरूर है यही हिन्दू मुसलमानों का एक दूसरों की रक्षा करना ही सौहार्द की चेतना का पल्लवन करता है।

नासिरा शर्मा का यह कथन आज की दृष्टि से उल्लेखनीय है। ''आज के हालत दूसरे हैं और उन्हीं हालात ने हमको एक विशेष नजरिया भी दिया है और वही नजरिया आज बाबरी मस्जिद और गुजरात में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। वह नजरिया हमारे संविधान का भी है कि हम एक हैं, हम बराबर हैं, हमको बिना भेदभाव के नागरिक अधिकार प्राप्त हैं। इसलिए वैचारिक संघर्ष का दूसरा चरण यह है कि हम हिन्दू–मुसलमान में बँट नहीं सकते हैं। कोई भी किसी को मार नहीं सकता इसलिए आज हर लड़ाई में देश की सुरक्षा व शान्ति के लिए इस तरह के नजरिए रखने वाले हिन्दू– मुसलमान साथ हैं। आज

---

7. यशपाल– झूठा सच– पृ0– 47
8. वीरेन्द्र यादव– झूठा सचः राष्ट्रवाद मुस्लिम अलगाव वाद और नारी प्रश्न तद्भव–1 पृ0– 22
9. यशपाल– झूठा सच खण्ड– 1 पृ0– 67
10. नासिरा शर्मा– भारतीय मुस्लिम समाज और झूठा सच– भारतीय साहित्य– यशपाल विशेषांक पृ0– 271 ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 12, Issue 1, December 2021 Impact Factor: 4.819

बाबरी मस्जिद या गुजरात फसाद पर बातें होंगी तो एक पक्षीय नहीं हो पाएँगी। आज जहाँ बाबरी मस्जिद और गुजरात की समस्या पर हिन्दू बढ़ चढ़कर बोल रहे हैं, वहीं पर कितने हिन्दू हैं जिन्होंने मुसलमानों को बचाया भी है और इसी तरह मुसलमानों ने हिन्दुओं को भी।''[11]

[11]. नासिरा शर्मा– भारतीय मुस्लिम समाज और झूठा सच– भारतीय साहित्य–यशपाल विशेषांक पृ0– 272– 273